सावरकर की माफी को लेकर विवाद क्यों

लेकिन सवाल यह है कि आखिर देश में सावरकर की माफी को लेकर बार–बार विवाद क्यों होते रहते हैं। इसमें दो राय हो ही नहीं सकती कि देश के बीसवीं सदी के इतिहास में सावरकर की अपनी एक खास भूमिका रही है जिसकी वजह से उनका अपना एक अलग स्थान है।

आरती सिंह।।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एक पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में यह कहकर सबको चौंका दिया कि स्वतंत्रता सेनानी और हिंदू महासभा के नेता वीर सावरकर ने अंग्रेजों से माफी महात्मा गांधी के कहने पर मांगी थी। उन्होंने अपने भाषण में इस दावे का कोई आधार नहीं बताया। जैसी कि अपेक्षा थी, उनके बयान पर कांग्रेस और अन्य दलों की ओर से तीखी प्रतिक्रिया सामने आई। इसे इतिहास को तोड़ने मरोड़ने की एक और कोशिश बताते हुए सवाल उठाया गया कि सावरकर की ओर से माफी की पहली अर्जी 1911 में डाली गई थी, जबकि महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत 1915 में लौटे, ऐसे में यह कैसे संभव हो सकता है कि सावरकर ने माफी गांधी के कहने पर मांगी हो?

बेहतर होता, रक्षा मंत्री अपनी बात ज्यादा स्पष्टता से और तथ्यों व सबूतों का आधार बताते हुए रखते। लेकिन सवाल यह है कि आखिर देश में सावरकर की माफी को लेकर बार–बार विवाद क्यों होते रहते हैं। इसमें दो राय हो ही नहीं सकती कि देश के बीसवीं सदी के इतिहास में सावरकर की अपनी एक खास भूमिका रही है जिसकी वजह से उनका अपना एक अलग स्थान है। अगर यह तथ्य है कि उन्होंने जेल से छूटने के लिए अंग्रेजी सरकार के पास बार–बार माफीनामा भिजवाया, तो इसे स्वीकार करने में हमें कोई दिक्कत क्यों होनी चाहिए?

इस देश को लेकर, इसकी संस्कृति, इतिहास और भविष्य को लेकर, देश की आजादी के लिए लड़ी जा रही लड़ाई को लेकर उस दौर के हर महापुरुष की अपनी एक समझ, अपना एक नजरिया था जिस पर आधारित उनकी खास रणनीति थी। यह रणनीति अगर भगत सिंह को फांसी के फंदे की ओर ले गई तो उस दौर में भी उनके तमाम साथियों की उस पर सहमति ही नहीं थी।

इसी तरह सावरकर की रणनीति ने उन्हें अंग्रेजी सरकार के पास माफीनामा भिजवाने को प्रेरित किया तो हमारा उनसे सहमत होना जरूरी नहीं है, लेकिन इसे लेकर शर्मिंदा महसूस करने का भी कोई कारण नहीं है। यह शर्मिंदगी ही है जिसकी वजह से हममें से कुछ लोग आज भी कभी सावरकर के माफीनामे को झुठलाने लगते हैं तो कभी इसके लिए महात्मा गांधी या दूसरे राष्ट्रनायकों की आड़ लेने की कोशिश करते हैं। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब हम एक खास दौर के इतिहास को उसके मूल रूप में समझने और संबंधित व्यक्तित्वों का सटीक मूल्यांकन करते हुए उनके गुणों–अवगुणों से सही सबक लेने के बजाय उन महापुरुषों को आपस में लड़ाना शुरू करते हैं कि फलां जी ढिकां जी से ज्यादा बड़े या छोटे थे। यह न केवल उन महापुरुषों की स्मृतियों के साथ अन्याय है बल्कि उस दौर की हमारी समझ को भी धुंधला और दूषित करता है। इसलिए इस प्रवृत्ति से जल्द से जल्द मुक्ति पाने की जरूरत है चाहे वह हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दौर से जुड़ी हो या मध्यकालीन और प्राचीन दौर के इतिहास से।

मांगने की रट

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

घर से जाने पर रास्ते में एक फकीर ने उसका पीछा किया और उससे कहा कि अब तो तुम मरने जा रहे हो, घर में तुम अकेले हो। इतना धन तुम्हारे घर में ही कैद पड़ा रहेगा, मुझे कुछ दे दो। कंजूस के बार बार मना करने पर भी फकीर ने कंजूस का पीछा नहीं छोड़ा और बरबार कुछ मांगने की रट लगाए रहा। कंजूस जब एकदम परेशान हो गया तो उसने कब्रिस्तान में पड़े बादाम के छिलकों के एक ढेर में से मुट्ठी भर छिलके उठाए और उस फकीर को दे दिए। बाद में कंजूस को एक कब्र में लिटा दिया गया और ऊपर से पूरी कब्र बंद कर दी गई। बस एक छोटा से छेद सिर की तरफ इस आशा के साथ कर दिया गया कि यह इससे सांस लेता रहे और अगली सुबह राजा को मरने के बाद का पूरा हाल सुनाए। सभी लोग कंजूस को उस कब्र में लिटाकर चले गए।

संपादकीय

क्या चाहते हैं चिनफिंग

चिनफिंग पांच साल के अपने तीसरे कार्यकाल को सुनिश्चित करने के लिए न केवल भारत बल्कि दक्षिण चीन सागर और ताइवान में अपनी ताकत दिखा रहे हैं। वह हॉन्गकॉन्ग, तिब्बत और शिनच्यांग में भी अतिराष्ट्रवादी भावनाओं के जरिये जनता और पार्टी काडरों का दिल जीतने की कोशिश कर रहे हैं। आगामी पार्टी कांग्रेस के पहले चिनफिंग (जो चीन के सर्वशक्तिशाली मिलिट्री कमिशन के मुखिया भी हैं) ने पिछले कुछ महीनों में पीएलए के आला जनरलों की छुट्टी कर अभूतपूर्व तौर पर पार्टी के अंदर अपनी स्थिति मजबूत की है। सवाल यह है कि दोनों देश एक–दूसरे को झुकाने के लिए केवल बंदरघुड़की ही दिखा रहे हैं या यह संदेश देना चाहते हैं कि वे युद्ध के लिए तैयार हैं। भारत–चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा के टकराव वाले इलाकों– गलवान और पैंगोंग से तो दोनों सेनाएं पीछे हट चुकी हैं, लेकिन हॉट स्प्रिंग और देपसांग में चीन पीछे नहीं हटने की जिद पर अड़ा है। पिछले 10 अक्टूबर को भारत और चीन के सैन्य कमांडरों की 13वें दौर की बातचीत चीन के अड़ियल रवैये की वजह से विफल रही। चीनी पक्ष ने शायद यह सोचा होगा कि सर्दियों को देखते हुए भारतीय पक्ष कुछ समझौता करने को तैयार होगा। लेकिन भारतीय सामरिक नेतृत्व ने दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। उसने भारी वजन वाले हथियारों को ढोने की क्षमता दिखाई। इससे यह संदेश गया कि वह किसी भी क्षण चीनी सेना से दो–दो हाथ करने को तैयार है। चिनफिंग चीनी 20वीं कांग्रेस से पहले भारत के खिलाफ अपना रुख और सख्त करते हुए दिखते रहना चाहेंगे।

भारत ने बताया कि हाई इंटेंसिटी वाले इस अभ्यास का मकसद यह पता लगाना था कि उत्तरी सेक्टर और संभावित संघर्ष वाले इलाकों में जरूरी साजोसामान पहुंचाने की व्यवस्था को कैसे मजबूत किया जाए।

दोनों ने किए युद्धाभ्यास

रंजीत कुमार।।

भारत और चीन, वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर 50 हजार से अधिक सैनिकों की आमने–सामने युद्ध की अवस्था में सबसे लंबी तैनाती कर दुनिया में एक कीर्तिमान बना चुके हैं। 10 अक्टूबर को दोनों देशों के बीच 13वें दौर की वार्ता विफल रही। इसके बाद 18 नवंबर को भारत और चीन के राजनयिकों की मीटिंग हुई। इसमें सैन्य कमांडरों के 14वें दौर की बैठक को हरी झंडी मिली। भारत और चीन विवाद सुलझने तक हालात को स्थिर बनाए रखने को मान गए हैं। लेकिन विवाद तो तभी सुलझेगा, जब दोनों में से कोई झुके।

18 महीनों से दोनों देशों की सेनाएं एलएसी पर हैं। यह दूसरी सर्दी होगी, जब हालात ऐसे ही रहेंगे। इसी 16 नवंबर को भारतीय थलसेना और वायुसेना ने एक साझा अभ्यास कर यह देखा कि अगर आगामी सर्दियों में युद्ध छिड़ जाए तो अलग–अलग मोर्चों पर सैनिक साजोसामान पहुंचाने की उनकी तैयारी कैसी है। भारत ने बताया कि हाई इंटेंसिटी वाले इस अभ्यास का मकसद यह पता लगाना था कि उत्तरी सेक्टर और संभावित संघर्ष वाले इलाकों में जरूरी साजोसामान पहुंचाने की व्यवस्था को कैसे मजबूत किया जाए। इस अभ्यास में वायुसेना ने अपने सबसे बड़े अमेरिकी ग्लोबमास्टर

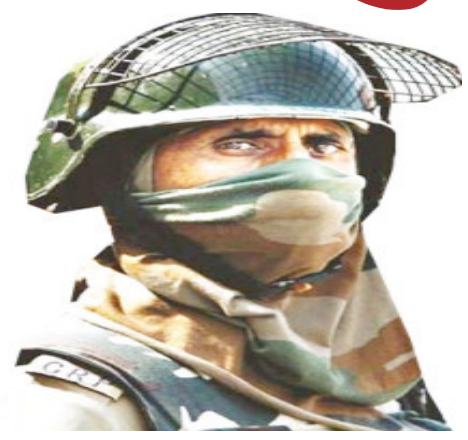

मालवाहक विमानों (80 टन भार उठाने की क्षमता) के अलावा रूसी आईएल–76(40 टन) और एएन–32 परिवहन विमानों (छह टन) का इस्तेमाल कर थलसेना के लिए जरूरी सैनिक साजोसामान और हथियार पहुंचाने की क्षमता परखी। वायुसेना ने एक साथ बीसियों टन सैनिक साजोसामान टकराव वाले इलाकों में पहुंचाने का अभ्यास किया। यह दिखाया कि युद्ध होने पर पर वह किस तरह से तालमेल कर इस काम को अंजाम देगी।

इससे पहले 8 नवंबर को चीन की पीपल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) ने बताया था कि उसके जवानों ने एक सप्ताह तक पश्चिमी पठारों के इलाके में युद्धाभ्यास किया। चीन ने बताया कि नवंबर की शुरुआत में भारतीय सेनाओं ने एक बड़ा सैन्याभ्यास किया था, इसलिए उसने भी ऐसा ही किया। चीनी विशेषज्ञों का कहना है कि चीनी सेना का यह कदम भारत के उकसावे वाली कार्रवाई के जवाब में था। इसमें दिखाया गया कि चीन अपनी संप्रभुता की रक्षा करने में सक्षम है। इससे पहले शिनच्यांग मिलिट्री कमांड ने संयुक्त फायर स्ट्राइक कन्फ्रंटेशन ड्रिल यानी पीएलए की जमीनी और हवाई सेना ने मिलकर युद्ध का अभ्यास किया।

साफ है कि लगातार दूसरी सर्दी के पहले भारत और चीन अपने–अपने कब्जे वाले इलाकों में युद्ध का शंखनाद कर रहे हैं। भारत और चीन की सेनाओं ने अपने शस्त्र भंडार की सबसे संहारक तोपों, मिसाइलों, लड़ाकू विमानों, मानवरहित विमानों यानी ड्रोनों को तैनात किया है। इनके साथ परमाणु हथियारों की ताकत भी है। भारतीय सेना की ओर से 300 किलोमीटर तक मार करने वाली ब्रह्मोस मिसाइलें, 40 किलोमीटर तक मार करने वाली हॉवित्जर तोपें, परमाणु बम गिराने में सक्षम सुखोई–30 और रफाल लडाकू विमानों से बचाव के लिए चीन ने रूस से ही खरीदी गई एस–400 एंटी मिसाइलें तैनात की हुई हैं। भारतीय सेना भी जल्द से जल्द एस–400 मिसाइलों की तैनाती कर सकती है।

सूडोकु नवताल-5328

सरल

8	5			3		6	1	
6	7		9		4		2	
2					1			4
	3	9			7			
	6	2		8		4	7	
			6			9	3	
3			5					7
	4		1		6		8	3
	8	5		7			9	6

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल-5327 का हल

6	3	7	2	1	5	4	8	9
9	8	4	3	7	6	5	2	1
2	5	1	9	4	8	7	3	6
3	6	8	5	9	7	1	4	2
7	2	9	4	8	1	6	5	3
4	1	5	6	3	2	8	9	7
5	7	6	8	2	9	3	1	4
8	4	2	1	6	3	9	7	5
1	9	3	7	5	4	2	6	8

अपना ब्लॉग

भारत युद्ध छेड़ने वाली कोई कार्रवाई नहीं करेगा

मोहन। दुनिया की दो आधुनिकतम सेनाएं एक दूसरे को सैन्य ताकत दिखाएं तो उससे भयावह आशंकाएं पनपती हैं। युद्ध न तो भारत चाहता है और न ही चीन। फिर भी चीन अपनी ताकत के दम पर भारत को डराकर झुकाना चाहता है। इसके लिए उसने वास्तविक नियंत्रण रेखा के इलाके में सैनिकों की लंबे वक्त तक तैनाती के लिए मजबूत ढांचागत संरचनाएं बनाई हैं। भारतीय सेना ने भी जवाब में ऐसा ही किया है। यह स्थिति कब तक बनी रहेगी? अगर यह जिद चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग की निजी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की वजह से है तो माना जा सकता है कि कम से कम अगले साल अक्टूबर तक (जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की हर पांच साल में होने वाली 20वीं कांग्रेस होगी) भारत और चीन की सेनाएं इसी तरह आमने सामने बर्फीली पहाड़ियों पर जमी रहेंगी। चीन को पता है कि भारत युद्ध छेड़ने वाली कोई कार्रवाई नहीं करेगा क्योंकि इससे भारत की अर्थव्यवस्था तबाह हो जाएगी।